

ओ मैया महिमा है तेरी अपार
विराजीं जाके मैहर में ॥२॥

ओ अम्बे महिमा है तेरी अपार
विराजीं जाके मैहर में ॥२॥

ऊँची - ऊँची बनी सीढ़ियाँ
मन भावन सी लागें

तेरे दर्शन से जग जननी
कष्ट दूर जो भागें

सारे जग की तुम्हीं आधार

विराजीं जाके मैहर में-----

ओ मैया-----

ध्वजा नारियल पान सुपारी

अगर कपूर की बाली

तेरी दया से मर्खे जगदम्बा

ज्योत जले दिन राती

तेरी महिमा है अपरम्पार

विराजीं जाके मैहर में

ओ मैया-----

देवरदान अमर पद पाऊं

जैसे आल्हा पाया

मैं भी दुखिया लाल हूँ शारद

द्वारे तेरे आया

पाया सबने तुम्हीं से प्यार

विराजीं जाके मैहर में----- ओ मैया-----

जब-जब कष्ट पड़ा हे माता

सबने तुम्हें पुकारा

चंड-मुंड और रक्तबीज को

पल में तुमने मारा

तू है शक्ति का भरा भंडार

विराजीं जाके मैहर में-----

ओ मैया-----

ब्रम्हा तेरे वेद उचारें

हरि-हर पार न पाये

सुक-सनकादि शेष नारद ने

तेरे ही गुन गाये

करें दास "श्री बाबा श्री" जयकार

विराजीं जाके मैहर में----- ओ मैया-----